

उन्नत जन-जुड़ाव एवं नतीजे

नलिनीश नगाइच, मानव संसाधन, एनपीसीआईएल

उमेद यादव, निगम योजना एवं निगम संचार, एनपीसीआईएल

पृष्ठभूमि

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्युत की आवश्यकता से हर एक जन परिचित है। विद्युत जीवन का अनिवार्य अंश हो चुका है और किसी भी प्रकार की प्रगति/ उन्नति इसके बैगैर सोचना संभव ही नहीं लगता। किसी समाज या राष्ट्र के किसी समूह की खुशहाली मापने का एक पैमाना यह है कि उस समूह में प्रति व्यक्ति बिजली की खपत कितनी है। इसका निहितार्थ यह है कि जितना अधिक बिजली खर्च की जा रही है, जीवन की गुणवत्ता उतनी ही बेहतर है। अतएव, बिजली आवश्यकता को उपलब्ध संसाधनों की सहायता से व्यवहार्य रीति से पूरा किया जाना ही समय की मांग है। किंतु, इस आवश्यकता की पूर्ति करते समय यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि ऊर्जा सम्मिश्र में हरित एवं स्वच्छ विद्युत का उचित रूप से समावेशन किया जाए ताकि वैश्विक तापमान वृद्धि की समस्या पर अंकुश लगाया जा सके। भारत भी अपनी विद्युत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ऊर्जा सम्मिश्र की नीति का अनुसरण करता है जिसमें न्यूक्लियर विद्युत की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है।

न्यूक्लियर विद्युत प्रौद्योगिकी, विकारबनीकरण (decarbonisation) का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, इसके साथ-साथ यह स्वच्छ, पर्यावरण हितैषी व बेस लोड विद्युत हेतु प्रमुख उत्पादन स्रोत भी है, जो चौबीसो घंटे उपलब्ध है। अतएव, न्यूक्लियर ऊर्जा एक व्यवहार्य एवं हरित स्रोत है जो मौसम परिवर्तन की आशंकाओं को कम करने में सहायक है। निकट भविष्य व माध्यमिक काल में न्यूक्लियर विद्युत की भूमिका अन्य स्रोतों से प्राप्त विद्युत की आपूर्ति में सहायता प्रदान करने तथा दीर्घकाल में विद्युत उत्पादन के लिए थोरियम के विशाल भंडार का उपयोग करने की है।

तदनुसार, न्यूक्लियर पावर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (एनपीसीआईएल) जो कि, परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई) का एक संघटक है, स्वदेशी दाबित भारी पानी रिपक्टरों (PHWRs) एवं विदेशी सहयोग से स्थापित किए जाने वाले साधारण जल

रिपक्टरों (LWRs), दोनों प्रकार की प्रौद्योगिकी के आधार पर न्यूक्लियर विद्युत रिपक्टरों की स्थापना के विस्तार संबंधी कार्य कर रहा है।

वर्तमान में, देश में कुल ६७८० मेगावाट क्षमता के २२ रिपक्टर प्रचालनरत (डीएई के स्वामित्व वाली आरएपीएस इकाई-१, १०० मेगावाट क्षमता सहित) हैं। कुल ६७०० मेगावाट क्षमता वाले नौ अन्य रिपक्टर निर्माण की विभिन्न अवस्थाओं में (५०० मेगावाट क्षमता वाले भाविनि के पीएफबीआर सहित) हैं। देश में अधिक न्यूक्लियर विद्युत संयंत्रों (अन्य हरित ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के साथ-साथ) की स्थापना के निश्चय से सरकार ने हरित ऊर्जा स्रोतों के प्रति अपनी प्राथमिकता स्पष्ट कर दी है। इसी क्रम में, बारह अन्य न्यूक्लियर विद्युत रिपक्टरों के लिए सरकार द्वारा प्रशासनिक अनुमोदन एवं वित्तीय संस्वीकृति प्राप्त हो चुकी है और इस संबंध में परियोजना पूर्व कार्यकलाप प्रारंभ किए जा चुके हैं। वर्ष २०३१ तक इन परियोजनाओं के क्रमशः पूरा होने के माध्यम से देश की संस्थापित न्यूक्लियर विद्युत क्षमता २२४८० मेगावाट हो जाएगी।

संधारणीय एवं समवेशी उन्नति के लिए हमें ऊर्जा के सभी स्रोतों का दोहन करने की आवश्यकता है। स्वदेशी प्रयासों की सहायता से पूर्ण न्यूक्लियर ईंधन चक्र की विशेषज्ञता हासिल करने के बाद, भारत अगले कुछ दशकों में न्यूक्लियर ऊर्जा की पूर्ण संभावनाओं का उपयोग करते हुए देश की बढ़ती बिजली मांग को पूरा करने में प्रमुख योगदान के लिए तैयार है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, हमारे जैसे विशाल प्रजातांत्रिक देश में समाज के सभी वर्गों का पूर्ण विश्वास प्राप्त किया जाना आवश्यक है।

न्यूक्लियर विद्युत के सन्दर्भ में, समाज के कुछ वर्गों में भ्रांतियां हैं। अक्सर न्यूक्लियर विद्युत के प्रति विपरीत विचार रखने वाले लोग अपने स्वार्थ हेतु इस भय को हवा देते रहते हैं।

न्यूक्लियर विद्युत उत्पादन के विभिन्न चरणों के बारे में भ्रांतियों एवं अपुष्ट सूचनाओं के कारण उत्पन्न अविश्वास विद्युत उत्पादन के विभिन्न तरीकों के

स्वस्थ सम्मिश्र में न्यूक्लियर विद्युत की भागीदारी की एक बड़ी बाधा है। इसका एक कारण यह है कि आम जन न्यूक्लियर ऊर्जा को विनाशकारी क्षमताओं (जापान में परमाणु बम विस्फोट) के वजह से ज्यादा जानता है परन्तु इसके अनेक अच्छे उपयोगी पहलुओं जैसे - विकास, स्वास्थ्य और दिनचर्या में उपयोग होने वाली अनेक चीजों से पूरी तरह परिचित नहीं है।

हम जानते हैं कि किसी उद्योग को स्थापित होने, प्रचालित होने और अपना सर्वश्रेष्ठ उत्पादन प्रदान करने में आम लोगों की राय अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। न्यूक्लियर विद्युत भी इसका अपवाद नहीं है। हमें, आम जनता के साथ ही न्यूक्लियर विद्युत संयंत्रों के निकटवर्ती क्षेत्रों की आबादी का समर्थन प्राप्त करने की आवश्यकता होती है। जहां एक ओर स्थानीय समुदाय संबंधित संयंत्रों के लिए अनुकूल वातावरण का सृजन करने में सहायक होते हैं वहीं दूसरी ओर आम जनता न्यूक्लियर ऊर्जा के संबंध में राष्ट्रीय नीतियों व निर्णयों को प्रभावित करती है।

न्यूक्लियर विद्युत कार्यक्रम के सुगम एवं सफल कार्यान्वयन के लिए न्यूक्लियर विद्युत के बारे में जागरूकता, इससे संबंधित अन्य पहलुओं व आम जन की शंकाओं का निर्मूलन आवश्यक है। इस दिशा में, एनपीसीआईएल ने न्यूक्लियर विद्युत के बारे में जागरूकता संवर्धन एवं निकटवर्ती क्षेत्रों के लोगों में न्यूक्लियर विद्युत के बारे में फैली भ्रांतियों को विश्वसनीय रीति से दूर करने के लिए बहुल माध्यम संपर्क के जरिए जागरूकता फैलाने हेतु बहु-स्तरीय कार्यक्रम लागू किया है। यह आलेख, इन कार्यों के लिए अपनाई जाने वाली विधि एवं अपनाए गए विभिन्न उपायों व उनके परिणामों पर संक्षिप्त प्रकाश डालता है।

जन जुड़ाव एनपीसीआईएल में

एनपीसीआईएल लंबे समय से जन जागरूकता गतिविधियां आयोजित करता रहा है। फिर भी फुकुशिमा के बाद इसने इस क्षेत्र में अपनी गति कई गुना बढ़ा दी है। मार्च 2011 में जापान में हुई

फुकुशिमा दुर्घटना में न्यूक्लियर ऊर्जा के बारे में देश के लोगों में बहुत तेज गति से चिंता उत्पन्न कर दी थी। यह चिंताएं प्रमुख रूप से न्यूक्लियर विद्युत संयंत्रों की संरक्षा, विकिरण इत्यादि के बारे में थी। घटना के तुरंत बाद देश में प्रचालनरत एवं निर्माणाधीन न्यूक्लियर विद्युत संयंत्रों की संरक्षा को एनपीसीआईएल के कार्य बलों तथा परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद की एक विशेषज्ञ समिति द्वारा पुनरीक्षित किया गया। इन समितियों ने पाया कि भारतीय विद्युत संयंत्र सुरक्षित हैं तथा इनके डिजाइन में ऐसी विशेषताएं और संभावनाएं मौजूद हैं जो गंभीर प्राकृतिक घटनाओं जैसे भूकंप और सुनामी को सहन कर सकें।

समीक्षा की इन रिपोर्टों को सार्वजनिक रूप से एनपीसीआईएल/परमाणु ऊर्जा विभाग तथा परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद की वेबसाइट पर डाला गया। इसे गहन रूप से प्रेस एवं मीडिया को दी जाने वाली जानकारी के माध्यम से पुनः सुदृढ़ किया गया। भ्रांतियों को संरचनागत रूप से मिटाने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाते हुए न्यूक्लियर विद्युत संयंत्रों के स्थलों के आसपास जन जुड़ाव गतिविधियों को कई गुना बढ़ा दिया गया। इन अभियानों को देश के अन्य हिस्सों में भी चलाया गया। एनपीसीआईएल ने एक बहुमुखी जन जुड़ाव कार्यक्रम अपनाया, जिसमें खुले पन और पारदर्शिता की भावना को शामिल किया गया।

स्पष्ट उद्देश्यों एवं समय-सीमा के साथ एक कार्य योजना विकसित कर कार्यान्वित की गई जिसमें पुनरीक्षण एवं मॉनीटरिंग तंत्र भी शामिल है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि न्यूक्लियर विद्युत की संधारणीयता हेतु जन-स्वीकृति महत्वपूर्ण है। अतः, भूकंप, सुनामी, विकिरण, कैसर, ताप पारिस्थितिकी, जैव-विविधता इत्यादि के विरुद्ध संरक्षा सुनिश्चित करने हेतु डिजाइन में विशिष्टताओं/प्रावधानों सहित न्यूक्लियर विद्युत संरक्षा के विभिन्न पहलुओं पर जन जुड़ाव गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है, ताकि बहुमुखी एवं अभिनव दृष्टिकोण को अपनाते हुए शंकाओं का समाधान किया जा सके।

फुकुशिमा दुर्घटना से पूर्व जन-जुड़ाव कार्यक्रम साधारण थे। परंतु, फुकुशिमा दुर्घटना ने विश्वभर में विभिन्न स्तरों पर लोक-चिंताओं को उत्पन्न किया एवं बढ़ा दिया, और हमारा देश भी प्रभावित हुआ। तूल

पकड़ने वाले मुख्य मुद्दे थे:

- न्यूक्लियर संयंत्रों की संरक्षा
 - संयंत्र से विकिरण के कारण स्वास्थ्य पर प्रभाव-कैंसर, ऊसरता एवं जन्मजात अपसामान्यताएं
 - पारंपरिक जीविकोपार्जन जैसे मत्स्यपालन, कृषि इत्यादि का नुकसान
 - पर्यावरणीय चिंताएं जैसे जैव-विविधता का नुकसान
 - वैचारिक भिन्नता वाले समूहों द्वारा गलत सूचना परिणामस्वरूप, फुकुशिमा के पश्चात जन-जुड़ाव कार्यक्रम के संपूर्ण दृष्टिकोण ने इसकी पुनः संरचना, संस्थागत और इसके पैमाने को कई गुना विस्तार दिया।
- संपूर्ण रणनीति में परिवर्तन समय की मांग थी। इसके लिए आवश्यक था कि जन-जुड़ाव को एक महत्वपूर्ण क्षेत्र माना जाए और प्रत्येक कार्मिक इसके लिए उत्तरदायी हो। इसे ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित उपाय किए गए:
- संगठनात्मक संरचनागत कार्यों को बहु स्तरों पर स्थापित किया गया
 - मुख्यालय में उच्च स्तरीय समिति गठित की गई
 - सभी स्थलों पर जन जागरूकता समितियां गठित की गई
 - स्पष्ट भूमिकाओं एवं उत्तरदायित्व सहित दिशा निर्देश एवं प्रक्रियाएं तैयार कर कार्यान्वित की गई
 - प्रभावशीलता में वृद्धि करने के लिए वरिष्ठ प्रबंधन की प्रतिभागिता को प्रोत्साहित किया गया
 - अल्प, मध्यम एवं दीर्घ अवधि के आधार पर कार्य योजना बनाई गई
 - महत्वपूर्ण क्षेत्रों एवं संसाधनों को चिन्हित किया गया
 - व्यावसायिक एजेंसियों के साथ साझेदारी की गई
 - स्थायी रूप से क्षमता सृजन को प्राथमिकता दी गई
 - संपूर्ण जन जागरूकता प्रक्रिया हेतु बहुमुखी दृष्टिकोण अपनाया गया
 - संप्रेषण में नवीन उपायों के प्रयास किए गए तथा आसान और प्राथमिक तौर पर प्रादेशिक भाषाओं को प्रोत्साहित किया गया
 - पर्यावरण परिचर्या कार्यक्रम को नई मजबूती

प्रदान की गई

- आस-पड़ोस को शामिल करने की संभावनाएं एवं तीव्रता में वृद्धि की गई
 - समयबद्ध रूप से सुधारात्मक कार्रवाई करने हेतु मॉनीटरिंग, प्रतिक्रिया आकलन एवं सुधारात्मक तंत्र स्थापित किया गया
- जन जागरूकता का समग्र उद्देश्य देश के नागरिकों तक पहुंचना था। तथापि, प्रारंभिक रूप से निम्नलिखित क्षेत्रों में प्रयास किए गए:
- न्यूक्लियर विद्युत संयंत्रों के आसपास रहने वाले लोग
 - विद्यार्थी एवं शिक्षकगण, नीति निर्माता जैसे कि विधायक, सरकारी अधिकारीगण, इत्यादि
 - मत प्रवर्तक एवं अन्य रसूखदार लोग
 - प्रेस एवं मीडिया
 - जन प्रतिनिधि एवं सामुदायिक नेता
 - चिकित्सक एवं शिक्षाविद
 - कर्मचारी एवं उनके परिजन
 - विभिन्न उद्योग, शिक्षण एवं अन्य संबंधित संस्थान
- रीतिबद्ध कार्य संरचना एवं बहुआयामी दृष्टिकोण:**
- जन जुड़ाव की प्रक्रिया को संस्थागत करने के प्रयास में स्थायी रूप से क्षमता निर्माण पर बल दिया गया। इस संबंध में किए गए कुछ उपाय निम्नवत हैं:
- स्थायी प्रदर्शनियों की स्थापना:
 - 'हॉल ऑफ न्यूक्लियर पावर' मुंबई, चेन्नई एवं दिल्ली में स्थापित। न्यूक्लियर ऊर्जा के विभिन्न पहलुओं पर एक उच्च स्वचालित एवं पारस्परिक चर्चा वाला शैक्षणिक मंच।
 - जयपुर, भुवनेश्वर एवं अन्य शहरों में ऊपर लिखित जैसे हॉल की योजना
 - सभी न्यूक्लियर विद्युत संयंत्र स्थलों पर सूचना केंद्र
 - लघु दीर्घाओं की स्थापना
 - विभिन्न जिला विज्ञान केंद्रों में मॉडल उपलब्ध कराना
 - मानव संसाधन को संबोधित करना
 - जन जागरूकता गतिविधियों हेतु ४०० से अधिक स्रोतयुक्त व्यक्तियों का प्रशिक्षण एवं विकास
 - विशेषज्ञ वक्ता द्वारा मीडिया विचार-विमर्श हेतु वरिष्ठ अधिकारियों को प्रशिक्षण

समाज के विभिन्न वर्गों के लिए उपयुक्त कार्यक्रमों का समावेश करते हुए एक संरचनागत योजना बनाकर कार्यान्वित की गई है। मीडिया से संबंधित ध्यान देने योग्य पहलू निम्नलिखित रहे,

- विश्वास का प्रादुर्भाव
 - बेहतर संबंध
 - वरिष्ठ प्रबंधन की भागीदारी
 - स्थल भ्रमण का प्रबंध करना एवं कार्यशालाओं का आयोजन करना
 - प्रेस विज्ञप्तियाँ एवं आवधिक रूप से सूचना संप्रेषण
 - आवश्यकतानुसार आलेख जारी करना एवं प्रतिक्रिया
 - कैंसर विशेषज्ञों, स्थलों से पर्यावरण सर्वेक्षण प्रयोगशाला अधिकारियों, महामारी अध्ययन विशेषज्ञों के दल द्वारा विकिरण व कैंसर के संबंध में भ्रातियों को दूर करने के लिए वैज्ञानिक सम्मेलन व कार्यक्रम आयोजित करना
 - मीडिया रिपोर्ट के विश्लेषण के लिए न्यूज आलेख संग्रह प्रणाली
- इसी प्रकार, आम जनता के लिए बहु-आयामी क्रियाविधि के कार्यान्वयन से संबंधित मुख्य पहलुओं में शामिल हैं:
- उपयुक्त सूचना/शिक्षा सामग्री का निर्माण व वितरण, जैसे
 - सरल क्षेत्रीय भाषा में न्यूक्लियर विद्युत के विभिन्न पहलुओं पर एकल पत्रक
 - टीवी कॉमर्सियल
 - एफएम रेडियो पर रिडियो जिंगल्स
 - डिजिटल मीडिया – सिनेमा व केबल टीवी
 - कॉमिक पुस्तकें
 - लघु फिल्में
 - एनीमेशन फिल्में
 - डॉक्युमेंटरी फिल्में
 - प्रकाशन – कई भाषाओं में पुस्तकें
 - न्यूक्लियर विद्युत पर विभिन्न स्थानों पर प्रदर्शनी
 - देश भर के विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में सत्र, व्याख्यान एवं प्रस्तुतीकरण
 - विभिन्न वर्गों जैसे ग्रामीणों, छात्रों, नीति-निर्माताओं व विचारकों और जन-साधारण को

समाविष्ट करते हुए स्थल भ्रमण में बढ़ोतरी

- चिकित्सकों, पैरामेडिकल व सुरक्षा कार्मिकों के लिए कार्यशाला
- आज की संचार प्रणालियों के अनुरूप वेब सेवाओं सहित जन संपर्क संबंधी उपाय भी किए गए जिनमें मुख्य हैं:
- एनपीसीआईएल वेबसाइट पर नाभिकीय ऊर्जा से संबंधित विस्तृत जानकारी अपलोड करना
 - सूचना और व्याख्यान प्रस्तुतीकरण पर नियमित रूप से अद्यतन जानकारी सुनिश्चित करना
 - वेब लिंक का निर्माण करते हुए आम जनता को सक्षम बनाना कि वे अपनी पसंद के न्यूक्लियर विद्युत संयंत्र में भ्रमण कर सकें
 - निम्नलिखित के माध्यम से सामाजिक मीडिया में अपनी उपस्थिति दर्ज कराना,
 - न्यूक्लियर मिल फाउंडेशन (एनएफएफ)
 - ब्लॉग एवं आलेख

नवप्रवर्तनकारी विधियाँ :

जन-साधारण से संपर्क के परंपरागत और विविध उपायों के अतिरिक्त कई नवप्रवर्तनकारी विधियों को अपनाया गया ताकि समग्र रूप से जन-जागरूकता कार्यक्रमलाप के कार्य-क्षेत्र, आयाम और प्रभावकारिता में बढ़ोतरी की जा सके। इनमें से कुछ उपाय निम्नलिखित हैं:

- लोक कला व मीडिया का उपयोग, क्षेत्रीय भाषाओं में नुक्कड़ नाटकों का आयोजन
- कृषक एकीकरण कार्यक्रम (एफआईपी) का आयोजन
- युवा छात्रों के लिए शिक्षा में समाचार-पत्र (एनआईई) का प्रारंभ
- आने वाले मीडिया पेशेवरों के लिए मीडिया छात्र अनुकूलन कार्यक्रम (एमएसएपी)
- ग्रामीण क्षेत्रों में चलित बस प्रदर्शनी के माध्यम से बृहद क्षेत्र को समाविष्ट करते हुए चल-प्रदर्शनी (एकजीबीशन ऑन व्हील्स)

पर्यावरण परिचर्या कार्यक्रम (ईएसपी)- एड ऑन :

एनपीसीआईएल ने एक स्वैच्छिक पर्यावरण परिचर्या कार्यक्रम (ईएसपी) प्रारंभ किया है जो न्यूक्लियर विद्युत संयंत्रों के अपवर्जन क्षेत्र में और उसके आसपास पाई जाने वाली जैव-विविधता, विशेष रूप से नभचर के वैज्ञानिक अध्ययन पर केंद्रित है। यह

कार्यक्रम आवास संवर्धन और स्वस्थ पर्यावरण के महत्व पर जागरूकता को प्रोत्साहित करता है और इस कार्य के लिए बीएनएचएस, आईबीसीएन, नेचर क्लब इत्यादि से जुड़ा हुआ है। ईएसपी के कुछ मुख्य अंश इस प्रकार हैं:

- न्यूक्लीयर पावर प्लांट (एनपीपी) अपवर्जन क्षेत्र में पौधों और प्राणियों के अभिलेखन, संरक्षण और संवर्धन के लिए एकल कार्यक्रम
- विशेषज्ञ संवर्धन एजेंसियों, गैर सरकारी संगठनों एवं क्षेत्रीय प्रकृति क्लबों के साथ इसे कार्यान्वित करना
- पक्षी मैराथन जैसे कार्यक्रमों को आवधिक आधार पर आयोजित करना
- तितली उद्यानों, कच्छप नर्सरी एवं गिद्ध रेस्तारं इत्यादि स्थापित करना
- कॉफी टेबल पुस्तकों के रूप में कई पुरस्कृत प्रकाशन



निकटवर्ती क्षेत्रों का विकास :

एनपीसीआईएल ने अपनी स्थापनाओं के आसपास रहने वाली आबादी के हितार्थ कई पहल की हैं ताकि निगम सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के भाग के रूप में समावेशी विकास सुनिश्चित किया जा सके। कौशल विकास सहित शिक्षा, स्वास्थ्य, आधारभूत संरचनात्मक विकास और स्वच्छता (स्वच्छ भारत अभियान) जैसे क्षेत्रों में मुख्य रूप से कई सामाजिक कल्याणकारी योजनाओं को कार्यान्वित किया गया है। मौजूदा प्रचालनरत स्थलों के आसपास किए गए सीएसआर कार्यक्रमलापों के अतिरिक्त नए हरित स्थलों, जहाँ परियोजनाएँ निर्माणाधीन हैं, के आसपास भी परियोजना-पूर्व कार्यकलाप प्रगति पर हैं।



मॉनीटरन व्यवस्था :

किसी कार्यक्रम की प्रभावकारिता के आकलन के लिए आवश्यक है कि समुचित मॉनीटरन और फीडबैक व्यवस्था की गई हो। इससे आवश्यक सुधारक कार्रवाई का समयबद्ध निष्पादन सुनिश्चित करना संभव हो पाता है। तदनुसार, जन संपर्क व्यवस्था के अभिन्न अंग के रूप में एक आंतरिक आकलन व्यवस्था प्रारंभ की गई जिसके मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं:

- कार्यक्रमों, उन पर किए गए खर्च और उनकी प्रभावकारिता की बहु-स्तरीय मॉनीटरन एवं उनकी रिपोर्ट
- सरकार में उच्चतम स्तर पर मासिक रिपोर्ट
- समाचार आलेख संग्रहण प्रणाली का विश्लेषण एवं रिपोर्ट
- ऑफलाइन एवं ऑनलाइन फीडबैक का विश्लेषण

उत्कृष्ट पद्धतियाँ एवं सक्षमता :

किए गए सभी प्रयासों के साथ-साथ हमारा उद्देश्य मुख्यतः जन संपर्क कार्यक्रमों का निरंतर विस्तार, सुधार और नव-प्रवर्तन करना है ताकि न्यूक्लियर विद्युत पर राय बनाने के लिए देश के नागरिकों को सशक्त बनाया जा सके। इस कार्यक्रम की उत्कृष्ट पद्धतियों और सक्षमताओं का सारांश निम्नलिखित के रूप में किया जा सकता है:

- सर्वोच्च प्राथमिकता देना, वरिष्ठ प्रबंधन की प्रतिभागिता
- जन संपर्क को क्रॉस फंक्शनल क्षेत्र के रूप में समझा जाना
- संरचनागत संगठनात्मक ढांचा, डिजाइन, कार्यान्वयन, मॉनीटरन और रिपोर्टिंग के लिए

गहन व्यवस्था

- क्षमता संवर्धन, संधारणीयता सुनिश्चित करना
- पेशेवर एजेंसियों के साथ प्रतिभागिता
- बहु-आयामी क्रियाविधि
- नव-प्रवर्तन

पुरस्कार एवं सम्मान :

किए गए प्रयासों के अनुभवों को ध्यान में रखते हुए, राजस्थान परमाणु बिजलीघर, इकाई-३ व ४ की आईईए ओसार्ट समीक्षा के दौरान, आईईए समीक्षा टीम ने जन संपर्क क्रियाविधि को उत्कृष्ट पद्धति माना है और निम्नलिखित टिप्पणियाँ की हैं:

“परमाणु बिजलीघर का जन-जागरूकता कार्यक्रम क्षेत्रीय समुदाय को न्यूक्लियर व विकिरण सुरक्षा के बारे में शैक्षिक अवसर प्रदान करता है।”

देश की जनता तक पहुँचने के प्रयासों को कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

- सर्वोत्तम संचार अभियान-2013 हेतु पब्लिक रिलेशन्स सोसाइटी ऑफ इंडिया (पीआरएसआई) राष्ट्रीय पुरस्कार
- सर्वोत्तम जन-जागरूकता कार्यक्रम श्रेणी में पीआरएसआई द्वितीय पुरस्कार- 2014
- सर्वोत्तम कॉफी टेबल पुस्तक श्रेणी में पीआरएसआई प्रथम पुरस्कार - 2014
- सर्वोत्तम जन-जागरूकता कार्यक्रम श्रेणी में पीआरएसआई पुरस्कार- 2016
- सर्वोत्तम संचार अभियान (बाह्य जनता) हेतु पीआरएसआई राष्ट्रीय पुरस्कार-2016
- 57वां एबीसीआई राष्ट्रीय पुरस्कार “फ्लायर्स

ऑफ अवर कोर्टयाईस”

- आईआईटीएफ - 2017 में रजत पदक
- “फ्लायर्स ऑफ अवर कोर्टयाईस” और “एटम ऑन व्हील” के लिए पीआरएसआई राष्ट्रीय पुरस्कार-२०१७
- इंडिकॉम सम्मेलन में “एटम ऑन व्हील्स” ने प्रतिष्ठा पुरस्कार २०१७ प्राप्त किया
- एटमएक्सपो अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार-२०१८ – अखिल विश्व का सर्वोत्तम संचार अभियान

परिणाम :

इस विस्तृत कार्यक्रम के परिणाम का सारांश निम्नानुसार किया जा सकता है:

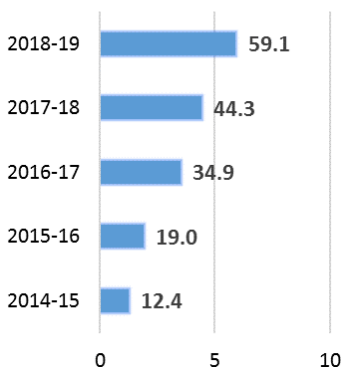
- न्यूक्लियर विद्युत के बारे में गहन जन-जागरूकता कार्यक्रम संचालित करना
- फुकूशिमा के पश्चात लोगों की शंकाओं/प्रश्नों का समाधान
- पॉलिसी निर्माताओं द्वारा न्यूक्लियर विद्युत को बृहद महत्व देना
- नई न्यूक्लियर विद्युत परियोजनाओं के लिए मंजूरी मिलना
- आगामी न्यूक्लियर विद्युत परियोजनाओं के लिए भूमि अर्जन
- न्यूक्लियर उपलब्धियों को मीडिया में भरपूर स्थान मिलना
- शंकाओं के कवरेज में खासी गिरावट
- न्यूक्लियर विद्युत संयंत्रों के प्रति किए जाने वाले विरोध में कमी

इन प्रयासों के माध्यम से जनता तक पहुँच में खासी वृद्धि हुई है, जिसे निम्नलिखित रूप में दर्शाया गया है:

किए गए प्रयास और जनता की प्रतिक्रिया उपर्युक्त चित्र में प्रदर्शित हैं, हालांकि यह यात्रा समाप्त नहीं हुई है और पूरे उत्साह एवं जिम्मेदारी के साथ यह कार्यक्रम जारी है। वास्तव में, यह एक अनवरत यात्रा है जिसे हम सभी को 'नाभिकीय दूत' के रूप में तय करनी है। आइये, हम सभी जन-साधारण के लिए उनकी बोलचाल की भाषा में आयोजित किए जाने वाले नाभिकीय ऊर्जा जागरूकता कार्यक्रम में अपना योगदान दें और स्वच्छ ऊर्जा, ऊर्जा सुरक्षा एवं संधारणीयता के राष्ट्रव्यापी अभियान का हिस्सा बनें।

!!! जय हिंद !!!

जनता तक पहुँच कार्यक्रम संख्या (लाखों में)



बोगों की संख्या जिनसे संपर्क किया गया

